एन.सी.ई.आर.टी. की इतिहास की पाठ्यपुस्तकों में चित्रों की भूमिका

हेमलता फ़ौजदार*

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के अनुसार स्कूली पाठ्यचर्या के चार सुपरिचित क्षेत्र-भाषा, गणित, विज्ञान और सामाजिक विज्ञान हैं। इतिहास सामाजिक विज्ञान की महत्वपूर्ण विधा है। इतिहास विषय– मानव के संपूर्ण भूतकाल का वैज्ञानिक अध्ययन तथा प्रतिवेदन है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 ने "शिक्षा बिना बोझ के" (1993) की रिपोर्ट की अनुसंशाओं के आधार पर स्कूली पाठ्यचर्या के सुपरिचित क्षेत्र सामाजिक विज्ञान में महत्वपूर्ण परिवर्तन के सुझाव दिए। इतिहास की पाठ्यपुस्तकों के निर्माण के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 महज़ शब्द आधारित पाठ के स्थान पर ऐसे पाठों की हिमायत करती है जिनमें गतिविधियाँ, चित्र, तस्वीरों, मानचित्रों, कार्टूनों का समावेश हो तथा वे विषयवस्तु के अभिन्न अंग हों। चित्र, तस्वीरें, मानचित्र आदि विषयवस्तु को रोचक तथा आनंदायक बना देते हैं। चित्रों द्वारा विद्यार्थियों की रचनात्मक क्षमता, सौंदर्यबोध व आलोचनात्मक समझ विकसित होती है। इतिहास की पाठ्यपुस्तकों में समावेशित इस प्रकार के चित्रों के माध्यम से विद्यार्थी ज्ञान ग्रहण करता है तथा नए ज्ञान का सृजन करता है। विद्यार्थी अपने आप को दूसरे से जोड़कर देखना सीखता है जिससे उसकी समझ बनती है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 की विचारधारा के अनुसार राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा निर्मित इतिहास की पाठ्यपुस्तकें पाठ तथा दृश्य सामग्री (चित्र, तस्वीर, मानचित्र) के साझेपन में इतिहास की पाठ्यपुस्तकें अपने शैक्षिक उद्देश्य को साकार कर पा रही हैं।

* *शोधार्थी,* राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर-302 004

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के अनुसार 'पाठ्य पुस्तकें ज्ञान का भंडार नहीं बल्कि ज्ञान की खोज व निर्माण में छात्र की मदद के लिए औज़ार हैं। पाठ्य पुस्तकें एक अमूल्य निधि तथा सर्वोत्तम मित्र हैं जो कि ज्ञान के सागर को समेटे हुए व्यक्ति को अज्ञानता के अँधेरे से निकाल कर ज्ञान के प्रकाश की ओर ले जाती हैं।' वर्तमान शैक्षिक चित्र में केंद्र बिंदु पाठ्यपुस्तकें हैं। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के अनुसार 'स्कूली पाठ्यचर्या के चार सुपरिचित क्षेत्र- भाषा, गणित, विज्ञान और सामाजिक विज्ञान हैं।' इन सुपरिचित क्षेत्रों में से सामाजिक विज्ञान में इतिहास, भूगोल, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र और मानव विज्ञान जैसे विषयों की विषयवस्तु समाहित की जाती है।

इतिहास सामाजिक विज्ञान की महत्वपूर्ण विधा है। इतिहास मानव जीवन के उद्‌गम एवं विकास की अखिल कहानी है। इतिहास विषय मानव के संपूर्ण भूतकाल का वैज्ञानिक अध्ययन तथा प्रतिवेदन है। अतीत के अध्ययन के आधार पर वर्तमान को समझा जाता है और भविष्य को उज्ज्वल बनाया जाता है। इसलिए विद्यालयी पाठ्यचर्या में इतिहास विषय का प्रमुख स्थान है। इतिहास के शिक्षण में पाठ्यपुस्तकों का महत्व बहुत अधिक है क्योंकि इतिहास भूतकाल से संबद्ध है तथा भूतकाल के विषय में सजीवता की अनुभूति को जागृत एवं विकसित करने में पाठ्यपुस्तकें विशिष्ट भूमिका निभाती हैं। इतिहास की पाठ्यपुस्तकों को सूचनाओं का केंद्र माना जाता है। माना जाता है कि इतिहास की पाठ्यपुस्तकों द्वारा विद्यार्थियों के मस्तिष्क में तथ्यों का अंबार लगाया जाता है।

पाठ्यपुस्तकों में मात्र तथ्यों और सूचनाओं का संग्रह होने के कारण इतिहास की विषयवस्तु नीरस तथा उबाऊ लगती है। 2005 से पूर्व निर्मित पाठ्यपुस्तकें औपचारिक रूप में बालकेंद्रित लगती थीं, वास्तविक मायने में नहीं। 2005 से पूर्व इतिहास की पाठ्यपुस्तकों का एक-एक पृष्ठ अवधारणाओं से लदा होता था। जिससे विद्यार्थियों पर पाठ्यचर्या का बोझ बढ़ गया और स्कूली पढ़ाई बाल्यावस्था तथा किशोरावस्था के निर्माणात्मक वर्षों में उनके शरीर व मस्तिष्क पर तनाव का स्रोत बन गई। इसलिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 ने "शिक्षा बिना बोझ के" (1993) की रिपोर्ट की अनुसंशाओं के आधार पर स्कूली पाठ्यचर्या के सुपरिचित क्षेत्र सामाजिक विज्ञान में महत्वपूर्ण परिवर्तन के सुझाव दिए।

1993 की यशपाल समिति ने अनुसंशा की है कि सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों को सूचना तथा तथ्यों की पोथी बनाने की बजाय संज्ञानात्मक समझ विकसित करने का माध्यम बनाना चाहिए। पाठ्यपुस्तकों का निर्माण इस प्रकार हो कि वे जिज्ञासा जगाएँ तथा आगे अध्ययन के द्वार खोलें। इस प्रकार इतिहास की पाठ्यपुस्तकों के निर्माण के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 महज़ शब्द– आधारित पाठ के स्थान पर ऐसे पाठों की हिमायत करती है जिनमें गतिविधियाँ, चित्र, तस्वीरों, मानचित्रों, कार्टूनों का समावेश हो तथा वे विषयवस्तु के अभिन्न अंग हों। चित्र, तस्वीरें, मानचित्र विषयवस्तु को रोचक तथा आनंदायक बना देते हैं।

बालक बचपन से ही चित्रों के द्वारा वस्तुओं की पहचान करना सीखता है। वह बचपन से चित्रों

के माध्यम से अध्ययन करने की विधि से अवगत रहता है। चित्रों के द्वारा अध्ययन कर विद्यार्थी जटिल विषयवस्तु को भी सरलता तथा स्पष्टता से सीखने में सक्षम होते हैं। चित्रों द्वारा विद्यार्थियों की रचनात्मक क्षमता, सोंदर्यबोध व आलोचनात्मक समझ विकसित होती है। इस कारण राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एनसीईआरटी) की पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति द्वारा निर्मित इतिहास की पाठ्यपुस्तकों में चित्रों की विभिन्न विधाओं को विषयवस्तु का अभिन्न अंग बनाया गया है। एनसीईआरटी की इतिहास की पाठ्यपुस्तकों में चित्रों, तस्वीरों, मानचित्रों को अवधारणाओं के साथ-साथ उचित मात्रा में स्थान दिया गया है। चित्रों की विभिन्न विधाएँ बच्चों के सीखने की शैली को तवज्जो देती हैं। एनसीईआरटी की इतिहास की पाठ्यपुस्तकें दिखने में आकर्षक हैं तथा रंग व चित्रों से भरपूर हैं। जैसे-

- कक्षा VI की इतिहास की पाठ्यपुस्तक 'हमारे अतीत-1' में समावेशित कुछ चित्र उदाहरण के रूप में-

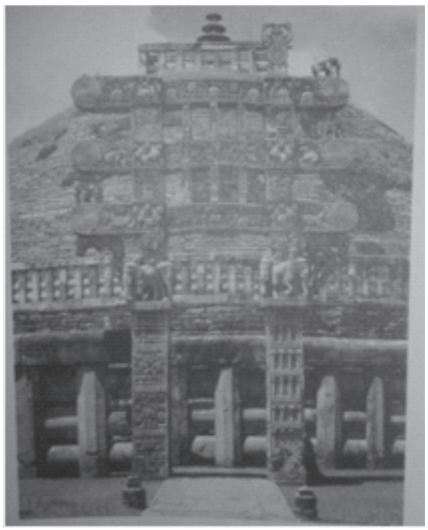

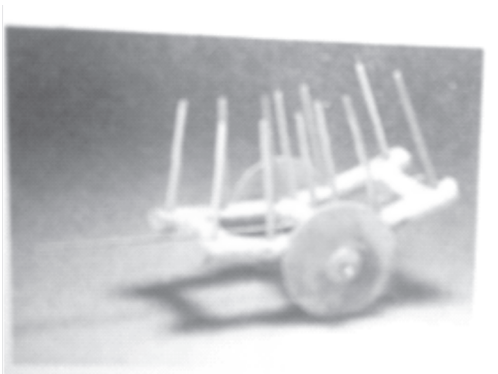

- कक्षा VII की इतिहास की पाठ्यपुस्तक 'हमारे अतीत-2' में समावेशित कुछ चित्र उदाहरण के रूप में-

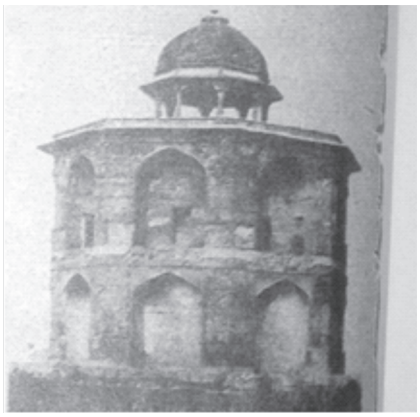

चित्र 7
कान के आभूषण, कबोई
नागा जनजाति, मणिपुर

कक्षा VII की इतिहास की पाठ्यपुस्तक के अध्याय-3 'दिल्ली के सुलतान' में पृष्ठ 32 पर निर्मित पाण्डुलिपि को तैयार करने के चित्र में जटिल अवधारणाओं को इस प्रकार व्यवस्थित कर प्रदर्शित किया गया है कि जिसके द्वारा अवधारणाओं को विद्यार्थियों के मस्तिष्क में आसानी से स्थानांतरित किया जा सके। इस प्रकार के चित्र विद्यार्थियों के ध्यानाकर्षण के लिए सशक्त माध्यम हैं।

कक्षा VIII की इतिहास की पाठ्यपुस्तक के अध्याय-4 'मुगल साम्राज्य' के पृष्ठ 52 पर निर्मित चित्र में जहाँगीर के समय में होने वाले भ्रष्टाचार का प्रदर्शन किया गया है। इस प्रकार के चित्र भूतकाल में हो रहे भ्रष्टाचार के पहलू पर सोचने को प्रोत्साहित करता है। ये चित्र बहुआयामी बहसों, तर्कों तथा अन्य मुद्दों पर सोचने, विचार करने के लिए उत्साहित करते हैं। इनके द्वारा विद्यार्थियों में आलोचनात्मक सवाल करने, वर्तमान में भूतकाल की तुलना करने, ज्ञान का सृजन तथा विवेचनात्मक चिंतन की क्षमता विकसित होती है।

कक्षा VI की इतिहास की पाठ्यपुस्तक के अध्याय-2 'आरंभिक मानव की खोज' में पृष्ठ 13 पर पत्थर के औज़ारों के उपयोग का चित्र उपस्थित है। इस प्रकार के चित्र विषयवस्तु को स्पष्टता तथा रोचकता प्रदान करते हुए भूतकाल की सामाजिक पृष्ठभूमि का बोध करने में सहायक हैं।

कक्षा VI की इतिहास की पाठ्यपुस्तक में प्रत्येक अध्याय का प्रारंभ बच्चों की तस्वीरों तथा इनके मन में जागृत सवालों से किया गया है। इस प्रकार से अध्याय का प्रारम्भ विद्यार्थियों को अपने आस-पास की दुनिया से सक्रिय रूप से जुडने, खोजबीन करने, प्रतिक्रिया करने तथा प्रश्न पूछने की प्रवृति करने में सहायक होता है।

एनसीईआरटी की इतिहास की पाठ्यपुस्तकों में महिला पात्रों तथा पुरुष पात्रों का चित्रण उपयुक्त मात्रा में किया गया है। इन पाठ्यपुस्तकों का निर्माण राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 की अनुसंशा को ध्यान में रखकर जेंडर असमानताओं से मुक्त किया गया है। उदाहरण के तौर पर कक्षा VIII की इतिहास की पाठ्यपुस्तक 'हमारे अतीत-III भाग-2' में समावेशित चित्र-

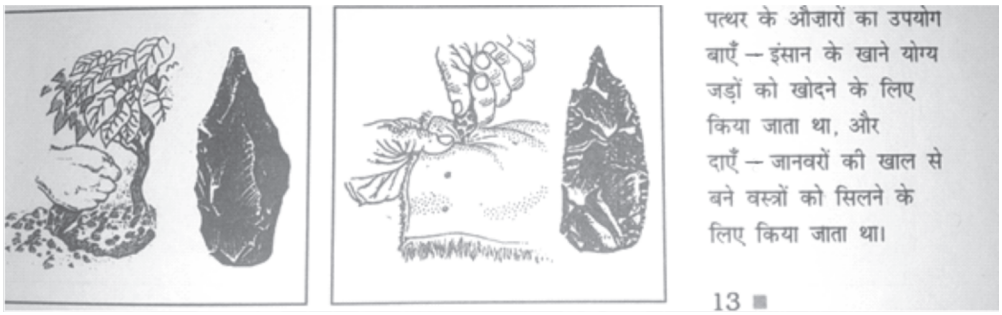

अध्याय 1
क्या, कब, कहाँ और कैसे?

रशीदा का सवाल

रशीदा बैठी अख़बार पढ़ रही थी। अचानक उसकी निगाह एक सुर्ख़ी पर पड़ी "सौ साल पहले"। वह सोचने लगी कि यह कोई कैसे जान सकता है कि इतने वर्षों पहले क्या हुआ था?

अध्याय 2
आरंभिक मानव की खोज में

तुषार की रेलयात्रा

तुषार अपने एक रिश्तेदार की शादी में दिल्ली से चेन्नई जा रहा था। रेल में उसे खिड़की वाली सीट मिल गई, जहाँ से वह बाहर का नज़ारा देखने में मग्न हो गया। तेज़ दौड़ती गाड़ी से उसने देखा कि पेड़-पौधे, घर, खेत-खलिहान बड़ी तेज़ी से पीछे की ओर छूटते चले जा रहे थे। तभी उसके चाचा ने उसके कंधे पर हाथ रख कर कहा, "पता है लोगों ने मात्र डेढ़ सौ साल पहले रेल से यात्रा करनी शुरू की थी? बस तो इसके कुछ दशक बाद आई।" तुषार सोचने लगा, कि जब लोगों के पास आने-जाने के लिए तेज़ रफ़्तार वाली सवारियाँ नहीं थीं, तो क्या वे यात्रा ही नहीं करते थे। क्या वे अपनी सारी ज़िंदगी एक ही जगह पर बिता दिया करते थे? नहीं, ऐसी बात नहीं थी।

चित्र 12 – *इस तसवीर में ये तीनों युगल तंजौर इलाके के अलग-अलग धार्मिक समुदायों को दर्शाते हैं। तंजौर की एक कम्पनी पेंटिंग (1830)।*

इतिहास की पाठ्यपुस्तकों में समावेशित चित्र विभिन्न उद्दीपनों के माध्यम से भूतकाल के अस्पष्ट एवं अमूर्त ऐतिहासिक तथ्यों को मूर्त व यथार्थ रूप में प्रस्तुत कर शीघ्र व स्थायी ज्ञानार्जन हेतु रोचक बनाते हैं। उदाहरणस्वरूप कक्षा VIII की इतिहास की पाठ्यपुस्तक 'हमारे अतीत- III भाग-1' में प्रस्तुत ऐतिहासिक चित्र–

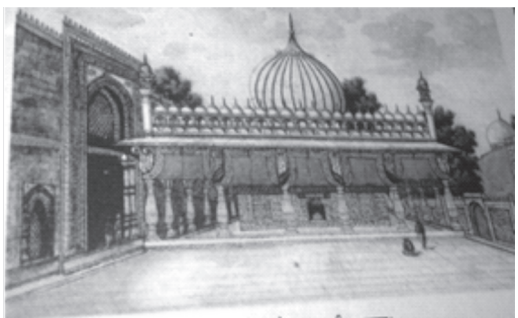

चित्र 5 - दिल्ली में निज़ामुद्दीन औलिया की दरगाह।

चित्र 6 - अपने बेटों और ब्रिटिश रेज़िडेन्ट के साथ खड़े नवाब शुजाउद्दौला, टिली कैटल द्वारा बनाया चित्र (तैल. 1772)।

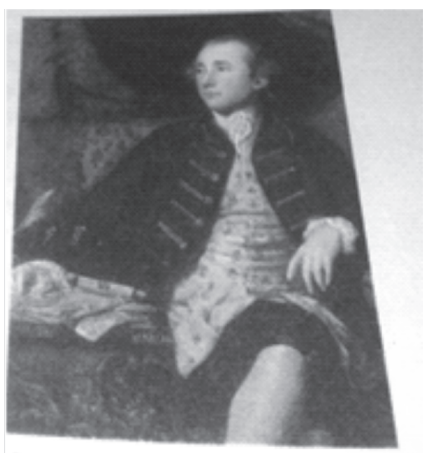

चित्र 3 - वॉरेन हेस्टिंग्स 1773 में भारत के पहले गवर्नर-जनरल बने।

ऊपर प्रस्तुत किए गए एनसीईआरटी की कक्षा VI, VII, VIII की इतिहास की पाठ्यपुस्तकों में उपस्थित चित्रों के द्वारा चित्रों के महत्व को प्रदर्शित किया गया है। इतिहास की पाठ्यपुस्तकों में समावेशित इस प्रकार के चित्रों के माध्यम से विद्यार्थी ज्ञान ग्रहण करता है तथा नए ज्ञान का सृजन करता है। विद्यार्थी अपने आप को दूसरे से जोड़कर देखना सीखता है जिससे उसकी समझ का विस्तार होता है। बच्चे इस प्रकार के चित्रों द्वारा निहितार्थ को गहराई से देख पाते हैं। चित्रों से बच्चों के अनुभवों, उनके स्वरों तथा उनकी सक्रिय सहभागिता को प्राथमिकता प्राप्त होती है। इनके माध्यम से विद्यार्थी अवधारणाओं को रटने की बजाय समझकर आत्मसात् कर पाते हैं।

चित्र जिज्ञासा जगाते हैं, सृजनात्मक कल्पनाशीलता को निखारते हुए आगे अध्ययन के द्वार खोलते हैं। इतिहास की पाठ्यपुस्तकों में चित्रों द्वारा विषयवस्तु के प्रस्तुतीकरण को स्पष्टता, सरलता तथा रोचकता प्रदान करने का सराहनीय प्रयास किया गया है। चित्रों के उपयोग द्वारा सभी विद्यार्थी अपनी-अपनी क्षमता के अनुसार मुद्दों का आलोचनात्मक विश्लेषण कर पाते हैं। पाठ्यपुस्तकों के लिए चित्रों के चयन का कार्य एक महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व का कार्य है। इस कार्य को राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की पुस्तक निर्माण समिति ने बहुत ज़िम्मेदारी के साथ निभाया है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 की विचारधारा के अनुसार राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा निर्मित इतिहास की पाठ्यपुस्तकों में हुए बदलाव प्रशंसनीय हैं। इन पाठ्यपुस्तकों का निर्माण इस प्रकार हुआ है कि वे रटने पर नहीं समझने पर ज़ोर देती हैं। पाठ तथा दृश्य सामग्री (चित्र, तस्वीर, मानचित्र) के साझेपन में इतिहास की पाठ्यपुस्तकें अपने शैक्षिक उद्देश्य को साकार कर पा रही हैं। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 पाठ्यपुस्तकों पर शोध अध्ययन को प्रोत्साहित करने का सुझाव देती है ताकि स्कूली ज्ञान पर नियमित शोध-आधारित जानकारी मौजूद रहे।

संदर्भ

एन.सी.ई.आर.टी. की इतिहास की पाठ्यपुस्तकें - कक्षा VI, VII, VIII

माथुर, पी. एन. 1987. *अध्यापन में श्रव्य-दृश्य साधन राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*, चंडीगढ़, हरियाणा साहित्य अकादमी

Dale, Edgar. 1996. *Audio-Visual Method in Teaching*, New York : The Dryden Press Holt, Rinehart and Winston Inc.

Pathak, S.P. 2003. *Teeching of History : The Paedo-Centric Approach*', Kanishka Publishers, New Delhi.

Sharma, S.P. 2011. *Teaching of Social Studies – Principles, Approaches and Practices*, Kanishka Publishers, New Delhi.